डॉ॰ गजानन शंकर सुर्वे
एम॰ए॰,पीएच्॰डी॰
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा - 415 002 (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर अध्यापक, हिन्दी
शोध-निर्देशक, हिन्दी
सदस्य, अभ्यास मण्डल, हिन्दी
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

191-बी, गुरुवार पेठ
दोशी बिल्डिंग
सातारा-415 002
(महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ॰ गजानन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा - यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री॰ जयवंत रघुनाथ जाधव ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्॰ फिल्॰ (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध - "मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : एक अनुशीलन" मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्री॰ जाधव के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

सातारा॰
दि॰ 28 जून, 1993॰

(डॉ॰ गजानन शंकर सुर्वे)
शोध-निर्देशक के हस्ताक्षर

प्र ख्या प न

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : एक अनुशीलन

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल्. (हिन्दी) के प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

(श्री. जयवंत रघुनाथ जाधव)
शोध-छात्र के हस्ताक्षर

सातारा.
दि. 28 जून, 1993.

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : एक अनुशीलन

प्राक्कथन

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार मुद्राराक्षस ने यद्यपि साहित्य के उपन्यास, कहानी, समीक्षा आदि अंगों पर भी कुशलता से अपनी लेखनी चलाई है, पर उनकी विशेष ख्याति असंगत नाटककार के रूप में ही है। हिन्दी नाटक साहित्य के इतिहास में "असंगत नाटक" एक अधुनातन विधा है। भुवनेश्वर प्रसाद द्वारा प्रवर्तित और डॉ·विपिनकुमार अग्रवाल द्वारा पोषित इस विधा को परम्परा के रूप में विकसित करने वाले नाटककारों में मुद्राराक्षस का नाम अग्रगण्य है।

जीवन की विभिन्न असंगतियों को असंगत नाट्य-शिल्प के द्वारा नग्न यथार्थ के रूप में प्रस्तुत करने वाली इस अधुनातन विधा पर साहित्यकारों, इतिहासकारों, आलोचकों और शोधकर्ताओं की दृष्टि प्रायः कम ही पड़ी है। डॉ·रामसेवक सिंह का "एब्सर्ड नाट्य-परम्परा" (हिन्दी और अंग्रेजी ग्रंथ) और डॉ·नरनारायण राय द्वारा संपादित "असंगत नाटक और रंगमंच" इन ग्रंथों के अतिरिक्त लगभग इस विधा के बारे में स्वतंत्र रूप से कुछ भी साहित्य प्राप्य नहीं है। यह जो साहित्य प्राप्य है उसमें भी डॉ·रामसेवक सिंह की किताब केवल पाश्चात्य असंगत नाटककारों तक ही सीमित है और डॉ·नरनारायण द्वारा संपादित किताब केवल संग्रह मात्र है। जब इस विधा के ही बारे में समीक्षक इतने उदासीन हैं तो इस विधा को अपनाने वाले साहित्यकारों के प्रति उनका क्या रूख होगा यह तो स्वयंसिद्ध है। यही कारण है कि मुद्राराक्षस और उनके असंगत नाटकों पर कभी किसी ने अनुसंधानात्मक कोई कार्य नहीं किया है। अतः नाटक के क्षेत्र में पूरी तरह से समर्पित लेकिन प्रायः समीक्षकों, इतिहासकारों और शोधकर्ताओं द्वारा उपेक्षित इस नाटककार का और उसके प्रमुख असंगत नाटकों का अनुशीलन करना हमारा प्रमुख उद्दिष्ट है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध सात अध्यायों में विभाजित है -

अध्याय 1 : प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक "असंगत नाटक : सैद्धांतिक विवेचन" है, जिसके अंतर्गत स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य साहित्य में असंगत नाटकों का स्थान, असंगत शब्द प्रयोग, असंगति की सार्वत्रिकता, उसके मनोवैज्ञानिक आधार, असंगत नाटक से अभिप्राय, असंगत नाटक और परम्परागत नाटक में भेद, पाश्चात्य ऐब्सर्ड नाट्य-परम्परा और उसका हिन्दी नाट्य परम्परा पर प्रभाव तथा भारतीय परिप्रेक्ष्य में असंगत नाटक आदि पर समुचित प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त असंगत नाटकों के सैद्धांतिक विवेचन के अंतर्गत असंगत नाटकों का कथ्य, चरित्र-सृष्टि संवाद और भाषाशैली, बिंब और प्रतीक योजना, रंगमंचीय आयाम एवं उद्देश्य आदि बातों का विवेचन-विश्लेषण किया गया है।

अध्याय 2 : प्रस्तुत अध्याय "हिन्दी के असंगत नाटक और मुद्राराक्षस" के नाम से अभिहित है जिसमें असंगत नाट्य परम्परा में योगदान देने वाले महत्त्वपूर्ण असंगत नाटककारों के असंगत नाटकों की संक्षिप्त जानकारी देकर मुद्राराक्षस के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व की चर्चा करते हुए आलोच्य नाटकों की कथावस्तु पर समुचित प्रकाश डाला है साथ ही शोध-कार्य की दिशा का संकेत दिया है।

अध्याय 3 : प्रस्तुत अध्याय को "मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : विसंगत जीवन-बोध" संज्ञा दी गई है। इसमें आधुनिक जीवन में चारों तरफ व्याप्त भ्रष्टाचार, मनुष्य में विकास करती पशुता, बौद्धिक नपुंसकता और विघटित मानवीय मूल्यों के कारण मानव जीवन में दिखाई देने वाली विभिन्न विसंगतियों को विवेचित-विश्लेषित करने का प्रयास किया है। साथ ही विसंगतियाँ प्रस्तुत करने के प्रमुख माध्यम विडम्बना और व्यंग्य के विभिन्न आयामों पर भी सोदाहरण प्रकाश डाला है।

अध्याय 4 : प्रस्तुत अध्याय का नामकरण "मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य"है,जिसमें मनोविज्ञान का महत्त्व प्रस्तुत करते हुए असंगत नाटक और मनोविज्ञान तथा मुद्राराक्षस के असंगत नाटकों में चित्रित मनोविज्ञान विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है। यहाँ मुद्राराक्षस के नाटकों में दिखाई देने वाले विभिन्न मनोविकारों,मनोविकृतियों और मनोरचनाओं या रक्षा युक्तियों

पर सविस्तर और सोदाहरण विवेचन-विश्लेषण करके स्वप्न, भीड़, फैशन आदि मनोविज्ञान के अन्य आयामों पर भी चर्चा की है।

अध्याय 5 : प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक "मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : नाट्य-शिल्प" रखा गया है, जिसमें मुद्राराक्षस के असंगत नाटकों का वस्तु-विन्यास, पात्र और चरित्र-सृष्टि, संवाद और भाषा शिल्प, गीत एवं संगीत योजना, बिंब और प्रतीक योजना तथा शीर्षकों के अभिनव प्रयोग आदि पर विचार करते हुए मुद्राराक्षस की शिल्पगत विशिष्टता प्रतिपादित की गई है।

अध्याय 6 : प्रस्तुत अध्याय का नामकरण "मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : रंगमंचीय आयाम" है, जिसमें नाटक और रंगमंच का परस्पर संबंध, रंगमंच परिकल्पना, पारम्परिक एवं असंगत नाटकों के रंगमंचीय उपकरण-मंचसज्जा, वेशभूषा, रूप-विन्यास, पात्रों का क्रिया-व्यापार, ध्वनि-प्रकाश योजना एवं दर्शकीय तथा पाठकीय संवेदनाएँ आदि के परिप्रेक्ष्य में मुद्राराक्षस के असंगत नाटकों का विवेचन-विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

अध्याय 7 : "मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : समन्वित मूल्यांकन" नामक प्रस्तुत अध्याय में शोध-प्रबंध का सार निरूपित किया गया है।

प्रबंध की मौलिकता -

1. "असंगत नाटक "हिन्दी नाट्य साहित्य की अद्यतन प्रवृत्ति है, जो समीक्षकों की दृष्टि से प्रायः उपेक्षित रही है। प्रस्तुत प्रबंध में असंगत नाट्य-विधा के सैद्धांतिक पक्ष को अधिकाधिक सुस्पष्ट बनाने का प्रयास किया है।
2. हिन्दी के असंगत नाटककार और उनके असंगत नाटकों पर समुचित प्रकाश डालकर शोध-कार्य के लिए एक नयी दिशा का संकेत किया है।
3. उपेक्षित असंगत नाटककार, अभिनेता और निर्देशक मुद्राराक्षस के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व पर यथोचित प्रकाश डाला है।
4. मुद्राराक्षस पर अभी तक शोध-कार्य नहीं हुआ है। अतः इस कमी की पूर्ति करने के लिए उनके असंगत नाटकों पर शोधकार्य करने का यह प्रथम मौलिक प्रयास है।
5. मनोविज्ञान, कथ्य, शिल्प, शैली तथा मंचीयता की दृष्टि से मुद्राराक्षस के नाटक महत्त्वपूर्ण हैं और इसीलिए उनके इन पहलुओं को शोध-कार्य में विशेष स्थान दिया गया है।

6. प्रस्तुत शोध-कार्य में अनुस्यूत विवेचन-विश्लेषण को अधिक स्पष्ट करने के लिए तालिकाएँ तथा छायाचित्रों का इस्तेमाल किया गया है।

कृतज्ञता-ज्ञापन -

प्रस्तुत शोध प्रबंध श्रद्धेय तथा वन्दनीय गुरूवर डॉ॰गजानन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा (महाराष्ट्र) के आत्मीय निर्देशन में लिखा है। अपने कार्य में व्यस्त होने के बावजूद शोध-प्रबंध के विषय-चयन से लेकर उसकी संपूर्ति तक उन्होंने जिस आत्मीयता, तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है, उसके प्रति शब्दों के माध्यम से कृतज्ञता व्यक्त करना मेरे लिए कठिन है। फिर भी इतना अवश्य है कि शोध-प्रबंध की पूर्ति का सारा श्रेय उन्हीं के आशीर्वचन और मार्गदर्शन का प्रतिफलन है। साथ ही साथ उन्होंने अपने निजी समृद्ध ग्रंथालय से समय-समय पर मुझे अनेक नाटक, संदर्भ ग्रंथ तथा कोश ग्रंथादि अध्ययन के लिए देकर मुझे उपकृत किया है। अतः उनके सामने श्रद्धाभाव से विनम्र होकर नतमस्तक होने में ही मैं गर्व का अनुभव करता हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में गुरूपत्नी वात्सल्यमूर्ति श्रीमती देवलता सुर्वे भाभी, मेरे छोटे-मोटे कार्यों में समय-समय पर हाथ बँटाने वाली गुरूकन्या कामायनी सुर्वे, प्रा॰सुश्री रूकसाना शेख, आदरणीय गुरूवर डॉ॰टी॰आर॰पाटील, मेरे पडोसी श्री॰रामचंद्र सावंत और उनका सारा परिवार तथा हमारे महाविद्यालय के उत्साहमूर्ति चिरतरूण प्रि॰अमरसिंह पां॰ राणे, आदि मुझे जब-तब सचेत कर यथाशीघ्र इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरणा देते रहें। उनकी सत्प्रेरणा और हार्दिक अनुकम्पा के लिए मैं उनका हृदय से शुक्रगुजार हूँ।

इसके अतिरिक्त प्रिय मित्रवर प्रा॰प्रकाश ताकभाते, प्रा॰बरगुले, श्री॰अशोक साबळे, प्रा॰आर॰जी॰पाटील, प्रा॰माधवराव पाटील, प्रा॰सुभाष जाधव, प्रा॰पी॰एस्॰कोळेकर, प्रा॰वाय॰के॰ मुलाणी, प्रा॰जे॰एन्॰शिंदे, प्रा॰एस॰जे॰बारगीर, प्रा॰व्ही॰टी॰मगर, प्रा॰सौ॰छायादेवी घोरपडे, प्रा॰सौ॰शैलजा माने, प्रा॰साळुंखे सर, प्रा॰लेवे और पढ़ाई के लिए मुझे हमेशा प्रेरणा देने वाले प्राचार्य पी॰बी॰चव्हाण, उनकी धर्मपत्नी, चि॰बंडू, अवि और पिंटू उर्फ पृथ्वीराज, मेरे पितृ-तुल्य अग्रज श्री॰लक्ष्मण निंबाळकर और भाभी सौ॰शोभा निंबाळकर तथा सचिन और नीतिन माने आदि ने भी इस शोध कार्य में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहायता की है। अतः इन सबके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

शोधकार्य में मेरी सहायता करने वाले उपर्युक्त लोगों के अतिरिक्त प्रतिकूल आर्थिक स्थिति में भी मुझे अधिक से अधिक पढ़ाने की ज़िद रखने वाले मेरे पूज्य पिताजी

श्री·रघुनाथ कृष्णा जाधव और माँ हिराबाई रघुनाथ जाधव के आशीर्वचन प्रस्तुत शोधकार्य के लिए विशेष उपयोगी साबित हुए हैं। मेरी प्रिय बहनें सौ·रत्नप्रभा भोसले और सौ·अलका जाधव, सौ·सुनिता देशमुख, तथा बहनोई श्री·रामचंद्र भोसले और संपत पाटील, मेरे अनुज चि·दत्तात्रय और उसकी धर्मपत्नी सौ·दीपा और बेटा विकास तथा मेरे श्वशुर श्री·बी·आर· राजेशिर्के, सास सौ·सरला राजेशिर्के और साले चि·किशोर, संजय और धनंजय आदि ने भी इस शोध-कार्य के लिए मेरी मदद की है। मेरी धर्मपत्नी सौ·जयप्रभा जाधव और बच्चे कु·जयंती और चि·जयेंद्र अगर घर की जिम्मेदारियों से मुक्त कर मुझे पढ़ाई के लिए वक्त न देते तो शायद यह शोध-कार्य पूरा ही न हो पाता। अतः मेरे इस शोध-कार्य में वे बराबर के हिस्सेदार हैं।

मेरे अध्ययन के लिए समय-समय पर मुझे संदर्भ ग्रंथ ढूँढकर देने वाले हमारे महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री·एस·ई·जगताप, श्री·जाधव और ग्रंथालय के अन्य कर्मचारी आदि के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। मेरे शोध-प्रबंध का विषय बने आदरणीय मुद्राराक्षस जी ने भी पत्राचार द्वारा मुझे जो सहायता की है, उसके लिए मैं हमेशा उनका ऋणी रहूँगा। प्रबंध-लेखन के लिए जिन संदर्भ-गंथों का मैंने उपयोग किया है उन सभी संदर्भ-ग्रंथों के लेखकों के धन्यवादार्थ मेरे पास शब्द नहीं है। अतः मैं उनके ऋण में ही रहना पसन्द करूँगा। अंत में आत्मीयता और तत्परता से सुचारू रूप में प्रबंध का टंकन-लेखन करने वाले मेरे मित्र श्री·मुकुंद ढवळे और उनके सहायक श्री·सुशिलकुमार कांबळे को मैं कैसे भूल सकता हूँ ? उनकी अमूल्य सहायता के लिए मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगा।

28/6/93

(श्री·जयवंत रघुनाथ जाधव)

125, गुरूवार पेठ,
सालुंखे बिल्डिंग, सातारा·
पिन - 415 002·
महाराष्ट्र